कृषि परिवर्तन यात्रा का भव्य स्वागत एवं आयोजन

के.ब.अ.स., मखदूम में कृषि परिवर्तन यात्रा का कार्यक्रम दिनांक 17 मई, 2014 को आयोजित किया गया। इस अवसर पर उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि डा. ए.सी. वार्ष्णेय, कुलपति, उ.प्र. पं. दीन दयाल उपाध्याय पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय एवं गौ–अनुसंधान केन्द्र (दुवासु) मथुरा एवं विशिष्ठ अतिथि डा. एस. के. दुबे, प्रभारी जल एवं मृदा संरक्षण केन्द्र, छलेसर, आगरा थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता डा. एस.के. अग्रवाल, निदेशक, केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम ने किया। डा. आर.पी. मिश्रा, प्रशिक्षण समन्वयक, एन.ए.आई.पी., नई दिल्ली, डा. एस.के. वारिक, प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय मछली अनुसंधान केन्द्र (सीफे), भुवनेश्वर, कार्यक्रम प्रभारी, कृषि परिवर्तन यात्रा, डा. पुनीत कुमार, प्रधान वैज्ञानिक, भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर उद्घाटन सत्र में उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में लगभग 105 प्रगतिशील कृषक/उद्यमी उपस्थित थे।

डा. एस.के. अग्रवाल ने स्वागत सम्बोधन किया तथा कृषि परिवर्तन यात्रा का उद्देश्य एवं महत्व के विषय में विस्तृत जानकारी प्रदान की। निदेशक महोदय द्वारा देश में खाद्यान निर्भरता पर प्रकाश डालते हुये कहा कि समय बदल रहा है तथा आवश्यकता है कि कृषि एवं पशुपालन में आपसी तालमेल बैठाकर नयी तकनीकीयों को अपनाकर उत्पादन को बढ़ाया जाय। उचित रखरखाव एवं देखभाल से पशुओं एवं कृषि की उत्पादकता को बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने फसलों एवं पशुओं के 'स्मार्ट मैनेजमेन्ट' पर जोर दिया।

डा. एन.के. वारिक, कार्यक्रम समन्वयक ने बताया कि मछली पालन, पशु पालन, उन्नत फसल एवं बागवानी उत्पादन के क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले 34 प्रगतिशील किसान को 11 राज्यों से आई.सी.ए.आर. ने चयनित किये। इन बाहर से आने वाले प्रकृतिशील किसानों व मथुरा जिले से आये हुए विभिन्न किसानों के बीच सूचनाओं का आदान–प्रदान एवं विचार–विमर्श किया गया। एन.ए.आई.पी., दिल्ली से पधारे डा. आर.पी. मिश्रा, प्रधान वैज्ञानिक ने कृषि उत्पादों के बेहतर बाजारीकरण पर प्रकाश डाला। डा. एस.के. दुबे, जल एवं मृदा संरक्षण केन्द्र, छलेसर, आगरा द्वारा जलमग्न क्षेत्रों में मृदा के संरक्षण एवं बेहतर उपयोगिता को तथ्यों के माध्यम से बताया। मुख्य अतिथि डा. ए.सी. वार्ष्णेय ने देश में कृषि अनुसंधान का खाद्यान्न उत्पादन पर सकारात्मक प्रभाव रेखांकित किया। उन्होंने देश की विविध कृषि एवं पशु सम्पदा का भी जिक्र किया तथा इनकी अर्थव्यवस्था में उपयोगिता के बारे में जानकारी दी। आईवीआरआई, इज्जतनगर, बरेली से पधारे डा. पुनीत कुमार, प्रधान वैज्ञानिक द्वारा कार्यक्रम के समस्त सहभागियों को धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

सभा के दूसरे सत्र में किसानों को एन.ए.आई.पी. तथा संस्थान की सफलता गाथा की वृत्तचित्र (डाक्युमेन्ट्री) दिखाई गई तथा किसान–वैज्ञानिक संवाद गोष्ठी का भी आयोजन किया गया। संस्थान में किसानों के लिए एन.ए.आई.पी., आई.वी.आर.आई., भारतीय फसल प्रसंस्करण संस्थान, तंजावुर एवं संस्थान द्वारा विकसित तकनीकों की एक प्रदर्शनी भी लगाई गई जिसका किसानों ने उत्साहपूर्वक अवलोकन किया। संस्थान के समस्त वैज्ञानिकों द्वारा इस कार्यक्रम में सहभागिता की गयी।

ICRISAT
NAIP - ICAR